शोध सारांश

स्त्री समस्या की जड़ें इतनी गहरी हैं कि उनका समाधान खोजना एक जटिल काम है। हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अपने साहित्य के माध्यम से बड़े तर्कपूर्ण ढ़ंग से स्त्रियों की समस्या की तरफ ध्यान आकर्षित किया है। स्त्री जिसे आधी आबादी कहा जाता है उसे अपनी समस्या को व्यक्त करने का अधिकार पितृसत्तात्मक समाज ने छीन रखा है। हम इस शोध के दौरान यह देख पाए कि द्विवेदी जी ने स्त्रियों की समस्या को न सिर्फ प्रस्तुत किया है वरन उस समस्या का पूर्ण समाधान भी प्रस्तुत किया है। स्त्रियों को बाधक नहीं साधक के रूप में हजारी प्रसाद ने वर्णित किया है। अपनी चिंत्तन एवं प्रतिभा के दम पर 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में स्त्रियाँ पूरे समाज को प्रभावित करती हैं। निपुणिका के द्वारा विधवा स्त्रियों की समस्या रेखांकित की गयी है। निपुणिका अपने वैधव्य जीवन में जितना लांछन झेलती है वह पितृसत्तात्मक समाज की सच्चाई है उसने करुणामय जीवन जीते हुए अपनी जैसी अन्य स्त्रियों के उद्धार की बात बाणभट्ट के सामने रखी। यहाँ महत्वपूर्ण है कि निपुणिका कथा की नायिका प्रतीत होती है। द्विवेदी जी स्त्रियों को लोक मानस का अभिन्न हिसा स्वीकार करते हैं जिसके बिना सृष्टि में प्रगति एवं शाश्वत शांति असंभव है। इतिहास तो द्विवेदी जी का सबसे मजबूत पक्ष ठहरता है। इस शोध में हमने पाया कि गहरी पड़ताल के साथ अपने इतिहास एवं संस्कृति की अच्छाइयों को ग्रहण करना वे श्रेयष्कर समझते हैं। द्विवेदी जी का चिंतन लोकधर्मी है। वे मनुष्य तथा समाजोद्धार को अपना पहला धर्म मानते हैं। द्विवेदी जी अपनी रचना के माध्यम से स्त्री जीवन के प्रत्येक पहलू को स्पर्श करते हैं। मनुष्य की क्रियाशीलता तभी सफल हो सकती है जब वह स्त्री को उचित अधिकार एवं सम्मान देकर उसे अपने समकक्ष का दर्जा

दे सकेगा। वे पुरुष को ज्ञान शक्ति एवं स्त्री को क्रिया और इच्छा शक्ति का प्रर्याय मानते हैं । पुरुष सफल तभी हो सकता है जब उसे स्त्री का सानिध्य प्राप्त हो। इसकी परिणति उनके सभी उपन्यासों में होती है। द्विवेदी जी ने जहाँ स्त्रियों को आए दिन हो रहे शोषण से मुक्ति के लिए भ्रष्ट समाज को जिम्मेदार ठहराया है वहीं धर्म एवं कर्मकांडों की भी खूब भर्त्सना की है।

उपन्यास 'बाण भट्ट की आत्मकथा' में विधवा समस्या, अपहरण समस्या, बाल विवाह की समस्या एवं देह विमर्श जैसे समकालीन विषयों को देखा जा सकता है। यह रचना राष्ट्रउद्धार, समाजोद्धार एवं नारी उद्धार की विराट चेष्टा ग्रहण किये हुए है इसमें त्रिकोणात्मक प्रेम की अनूठी कहानी भी देखी जा सकती है । वर्तमान नारीवाद जहाँ पितृसत्ता के सभी मानकों को नकारता है और परिवार एवं विवाह प्रथा का निषेध करता है, वहीं द्विवेदी जी पितृसत्ता एवं विवाह प्रथा की खामियों को परिष्कृत करके नए मूल्यों के साथ अपनाने पर जोर देते हैं। उनके यहाँ स्त्री के लिए वे सारी मान्यताएं त्याज हैं जो स्त्रियों को मूक रहने पर प्रशंसा करती हैं अनुभूतिपरक लगाव के द्वारा स्त्रियों के कष्टों को पहचाना जा सकता है और यही सामाजिक एकता का सूत्र है।

निष्कर्षतः हम पाते हैं कि द्विवेदी जी द्वारा बाणभट्ट की आत्मकथा में स्त्रियों के लिए लोकमानस को दुर्व्यवस्थाओं के प्रति सुधार लाने का आग्रह हैं । स्त्रियों को आत्मबल एवं चेतना से युक्त दिखाकर समाज में स्त्रियों की स्थिति को नई दिशा देना उनका लक्ष्य माना जा सकता है। द्विवेदी जी ने अपने उपन्यासों में रूढ़ियों को तोड़ने का भी साहस स्त्रियों को दिया है । यही तथ्य उनकी स्त्री चेतनावादी दृष्टि को समकालीन बनाते हैं।